*B.M.E.B.R. Vol. XIII, No. 1-2, pp. 102-110*

# आगमीय वनस्पतियों की पहचान

मुनि श्रीचन्द्र 'कमल' एवं झूमरमल बैंगानी*

(दिनांक 1 अप्रैल, 1992 को प्राप्त)

[जैन आगमों में पशु-पक्षियों के मांस खाने की चर्चा यत्र-तत्र हुई है। जैन परम्परा में उनका अर्थ मांस से भिन्न पाक या वनस्पति करते आ रहे हैं। आज तक इस विषय पर किसी विद्वान् ने शोध के लिए अपना समय नहीं लगाया है। मुनिश्री श्रीचन्द्र जी लम्बे समय से इस शोध कार्य में लगे है। श्री झूमरमलजी बैंगानी भी इस बारे में अच्छा अनुभव रखते हैं, क्योंकि वे आयुर्वेद चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष होने के नाते इस प्रवृत्ति का संचालन कई वर्षों से कर रहे हैं। उन्होने गहन शोध कर के जो वनस्पतियों की पहचान दी है, वह जैन जगत् के लिए अपूर्व देन है। —संपादक]

जैन आगमों में वनस्पतियों के अनेक नाम आए है। जीवाभिगम सूत्र, प्रज्ञापना सूत्र और भगवती सूत्र में विस्तार से वनस्पतियों के नामों का उल्लेख हुआ है। प्रज्ञापना सूत्र की अपेक्षा भगवती सूत्र में 9 नाम अधिक आए हैं, फिर भी उसमें संकेत प्रज्ञापना सूत्र का ही दिया गया है। दोनों सूत्रों में पाठांतर की भिन्नता के अतिरिक्त सारे नाम समान हैं। व्यवस्थितता का क्रम जैसा प्रज्ञापना में है वैसा भगवती सूत्र में नहीं है। उसमें वनस्पतियों को 12 भागों में बाँटा गया है—

रुक्खा गुच्छा गुम्मा लता य, वल्ली
व पठवगा चेव।
तण वलय हरिय ओसहि जलरुह
कुहणा य बोधव्य ।।

उवांगसूत्रों का विशेषकर प्रज्ञापना सूत्र का शब्दानुक्रम करते समय पहले पद में दासी, चोर, मज्जार, मणोज्ज, बाण, बिल्ली, दीवग, वराह, मेष, नखी, मंडूकी, उदक, पाणी, अप्पा, तिमिर, फणिज्जय, जवजव, पंचंगुलिय, सूरवल्ली, पाववल्ली, अलिसंद आदि अनेक शब्द सामने आए। प्रथम दर्शन में लगा कि ये सब प्राणीवाची, पानी आदि शब्दों के वाचक हैं। मन में विकल्प उठा कि वनस्पति के प्रकार में प्राणीवाची शब्द कैसे ? प्रज्ञापना सूत्र की टीका को देखा। उसमें कुछेक शब्दों की पहचान दी है, अधिकांश शब्दों की पहचान है ही नहीं। इन अपरिचित शब्दों के विषय में कुछ नहीं कहा गया है। वनौषधिचन्द्रोदयकोश देखा, उसमें विशेष नामों की विभिन्न

*कार्यकारी अध्यक्ष, जैन विश्व भारती लाडनू (राजस्थान)